सरस्वती

मणिका संस्कृत व्याकरण

(कक्षा-6)

लेखिका

सुनीता सचदेव

एम०ए० (संस्कृत), बी०एड्०

सेवानिवृत्त संस्कृत विभागाध्यक्षा

भटनागर इंटरनेशनल स्कूल

वसंत कुंज

© New Saraswati House (India) Private Limited

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

नई दिल्ली-110002 (इंडिया)

NEW SARASWATI HOUSE

Head Office : Second Floor, MGM Tower, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)
Registered Office : A-27, 2nd Floor, Mohan Co-operative Industrial Estate, New Delhi–110 044

Phone : +91-11-4355 6600
Fax : +91-11-4355 6688
E-mail : delhi@saraswatihouse.com
Website : www.saraswatihouse.com
CIN : U22110DL2013PTC262320
Import-Export Licence No. 0513086293

Branches:
• Ahmedabad: Ph. 079-2657 5018 • Bengaluru: Ph. 080-2675 6396
• Chennai: Ph. 044-2841 6531 • Dehradun: Ph. +91-98374 52852
• Guwahati: Ph. 0361-2457 198 • Hyderabad: Ph. 040-4261 5566 • Jaipur: Ph. 0141-4006 022
• Jalandhar: Ph. 0181-4642 600, 4643 600 • Kochi: Ph. 0484-4033 369 • Kolkata: Ph. 033-4004 2314
• Lucknow: Ph. 0522-4062 517 • Mumbai: Ph. 022-2876 9871, 2873 7090
• Nagpur: Ph. +91-70661 49006 • Patna: Ph. 0612-2275 403 • Ranchi: Ph. 0651-2244 654

Revised edition 2018
Reprinted 2019, 2020

ISBN: 978-93-52722-58-7

The moral rights of the author has been asserted.

© New Saraswati House (India) Private Limited

Publisher's Warranty: The Publisher warrants the customer for a period of 1 year from the date of purchase of the Book against any Printing/Binding defect or theft/loss of the book.
Terms and Conditions apply: For further details, please visit our website www.saraswatihouse.com or call us at our Customer Care (toll free) No.: +91-1800 2701 460
Jurisdiction: All disputes with respect to this publication shall be subject to the jurisdiction of the Courts, Tribunals and Forums of New Delhi, India Only.
All rights reserved under the Copyright Act. No part of this publication may be reproduced, transcribed, transmitted, stored in a retrieval system or translated into any language or computer, in any form or by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopy or otherwise without the prior permission of the copyright owner. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Product Code: NSS2MSV060SKTAB17CBN

This book is meant for educational and learning purposes. The author(s) of the book has/have taken all reasonable care to ensure that the contents of the book do not violate any copyright or other intellectual property rights of any person in any manner whatsoever. In the event the author(s) has/have been unable to track any source and if any copyright has been inadvertently infringed, please notify the publisher in writing for any corrective action.

PRINTED IN INDIA
By Vikas Publishing House Private Limited, Plot 20/4, Site-IV, Industrial Area Sahibabad, Ghaziabad–201 010 and published by New Saraswati House (India) Private Limited, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)

© New Saraswati House (India) Private Limited

प्राक्कथन

प्यारे बच्चो! संस्कृत को समझने, बोलने तथा लिखने के लिए हमें व्याकरण के कुछ नियमों को समझना होगा। प्रस्तुत पुस्तक संप्रेषणात्मक पाठ्यक्रम पर आधारित है। आशा है इस पुस्तक के द्वारा संस्कृत भाषा को समझकर आप सब भी इस भाषा को बोल-चाल का माध्यम बना सकेंगे। इस पुस्तक में सरल भाषा में संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार व्याकरण के नियमों को समझाया गया है। आशा है छात्र इस प्रयास से लाभान्वित होंगे। सभी विद्वद्गण अपने अनुपम सुझाव देकर पुस्तक को और उपयोगी बनाने में हमारी सहायता करें।

मैं विशेष रूप से न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा०लि० की आभारी हूँ जो छात्रों की पाठ्य-सामग्री को अधिकाधिक रोचक तथा उपयोगी बनाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं। मैं कृतज्ञ हूँ अपने पिता श्री मेहरचन्द जावल जी की जिनकी प्रेरणा ने मुझे संस्कृत विषय के साथ जोड़कर मेरे जीवन को संस्कृतमय बनाया ताकि मैं अपने देश के इस सुंदर व गरिमा से युक्त भाषा-ज्ञान को पा सकूँ तथा इसे आगे फैला भी सकूँ।

–सुनीता सचदेव

© New Saraswati House (India) Private Limited

संस्कृत भाषा का परिचय

प्रिय बच्चो! संस्कृत शब्द का अर्थ है–संस्कार अर्थात् पवित्र की गई भाषा। नाम के ही अनुसार संसार में केवल संस्कृत भाषा ही दोषहीन व्याकरण वाली पवित्र भाषा है।

संस्कृत भाषा उस भारोपीय परिवार की भाषा है जिससे सभी भाषाओं का जन्म हुआ। भारत की अनेक भाषाओं का जन्म संस्कृत भाषा से ही हुआ।

प्राचीन काल में सभ्य समाज संस्कृत भाषा बोलता था तथा ग्रामीण समाज प्राकृत भाषा बोलता था जो कि संस्कृत का ही परिवर्तित रूप है। चारों वेद, उपनिषद्, पुराण इत्यादि इसी भाषा में लिखे गए। रामायण तथा महाभारत भी इसी भाषा में लिखे गए।

संस्कृत के अनेक कवियों में से कुछ प्रसिद्ध नाम हैं–कालिदास, भारवि, बाणभट्ट, माघ इत्यादि। आज भी अनेक विद्वान इस भाषा को अपनी रचनाओं से समृद्ध कर रहे हैं। सभी संस्कृत प्रेमियों का मन दक्षिण भारत में कर्नाटक के 'माटुर' और 'होसहल्ली' तथा मध्यप्रदेश के 'झिरी' गाँव जाने को तो करता ही होगा जहाँ के सभी लोग केवल संस्कृत भाषा ही बोलते हैं। संसार में संस्कृत के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसी भाषा नहीं है जो प्राचीनतम होते हुए भी वर्तमान युग में बोली जाती हो। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार संसार की सभी भाषाओं में से 'संस्कृत भाषा' ही कम्प्यूटर के प्रयोग के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है। कुछ विद्वानों के अनुसार संस्कृतभाषी छात्र संसार की किसी भी भाषा को अन्य लोगों से अधिक जल्दी व आसानी से सीख सकते हैं। संभवतः संस्कृत भाषा के इसी गुण को जानकर विदेशों में भी दो विद्यालयों में संस्कृत भाषा को अनिवार्य विषय बना दिया गया है। 'जर्मनी' में भी संस्कृत भाषा को सीखने वाले लोग दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। हमें गर्व है कि 'संस्कृतभाषा' हमारे भारत देश की भाषा है।

पाठ्यक्रमः

1. संस्कृतवर्णमाला
2. मात्राज्ञानम्
3. संयुक्ताक्षरज्ञानम्
4. वर्ण-विन्यासः संयोजनम् च
5. शब्दरूपाणि – अकारान्त पुंल्लिंग शब्द–अज, देव, राम इत्यादि।
   आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द–लता, रमा, निशा इत्यादि।
   अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द–फल, पुस्तक, मित्र इत्यादि।
   सर्वनाम शब्द–तत्, एतत्, किम्, युष्मद्, अस्मद्, यत्।
6. धातुरूपाणि (लट् लकार एवं लृट् लकार) – √पठ्, √खाद्, √पत्, √दृश्, √चल्, √गम्, √लिख्, √हस्, √नृत्, √धाव्, √नम्, √रुद्, √दा, √स्था, √पा, √वद्, √कृ, √भ्रम्, √पच्, √तृ, √चर्, √गर्ज्, √खेल्, √क्रीड्, √खन्, √क्षिप्, √भू, √अस्, √कूज्, √रक्ष्।
7. कारक एवं उपपद विभक्ति परिचय – आठों कारक विभक्तियों के चिह्न तथा सह, नमः, अलम्, बिना आदि उपपदों के विशेष नियम।
8. अव्ययपरिचयः – च, एव, न इत्यादि।
9. पर्यायाः विपर्ययाः च
10. वाक्य-रचना – कर्ता तथा क्रिया संबंध।
11. संख्याः – एक से बीस तथा एक से चार तीनों लिंगों में।
12. अशुद्धि-शोधनम् – लिंग, विभक्ति, वचन इत्यादि के अनुसार।
13. अपठित-अवबोधनम् – 40-50 शब्द परिमित एवं 70-80 शब्द परिमित।
14. चित्रवर्णनम् – चित्र को देखकर मंजूषा की सहायता से वाक्य निर्माण करना।
15. सङ्केताधारित-वार्त्तालापः – मंजूषा की सहायता से।

© New Saraswati House (India) Private Limited

विषय-सूची

खण्ड 'क' (अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्)

1. **संस्कृतवर्णमाला** 09
   (अक्षर-ज्ञानम्, मात्रा-ज्ञानम्, वर्ण-विन्यासः च)

2. **शब्दरूप-प्रकरणम्** 23
   (अकारान्त-पुंल्लिङ्ग-शब्दाः, आकारान्त-स्त्रीलिङ्ग-शब्दाः, अकारान्त-नपुंसकलिङ्ग-शब्दाः च)

3. **धातुरूप-प्रकरणम्** 51
   (लट्लकारः, लृट्लकारश्च)

4. **कारकाः विभक्तयः च** 63

5. **अव्ययाः** 71

6. **पर्यायाः एवम् विपर्ययाः** 75

7. **वाक्य-रचना** 80

8. **संख्याः** 86

9. **अशुद्धि-संशोधनम्** 90

खण्ड 'ख' (रचनात्मकं कार्यम्)

10. **चित्र-वर्णनम्** 95

11. **सङ्केताधारित-वार्त्तालापः** 104

खण्ड 'ग' (अपठित-अवबोधनम्)

12. **सरलाः गद्यांशाः** 113

- **अभ्यास-प्रश्नपत्रम्** 132

© New Saraswati House (India) Private Limited

शुरू से ही संस्कृत परीक्षा की तैयारी कैसे करें?

1. उच्चारण

- संस्कृत भाषा में उच्चारण का महत्व बहुत अधिक है। हम जैसा पढ़ते हैं वैसा ही लिखते हैं। शुद्ध पढ़ें तथा शुद्ध लिखें।
- ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का (एक बार ताली बजाने जितना) समय लगता है तथा दीर्घ स्वरों के लिए दो मात्रा का (दो बार ताली बजाने जितना) समय लगता है।
- प्लुत स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से तीन गुणा या उससे भी अधिक समय लगता है।
- **अ** से युक्त व्यंजनों को ध्यान से पढ़ें तथा बोलें, क्योंकि **अ** की कोई मात्रा नहीं होती।
- संयुक्त स्वरों को ध्यान से बोलें। संयुक्त वर्णों का उच्चारण करते समय शुद्ध व्यंजन से पहले वाले अक्षर पर बल देना चाहिए।
- ऋ तथा र वर्णों का उच्चारण ध्यान से करें।

2. लेखन

- प्रत्येक वर्ण को सुंदर व स्पष्ट लिखने का अभ्यास करें।
- संयुक्त वर्णों को विशेष ध्यान से लिखें।
- अनुस्वार का उच्चारण जहाँ हो उसी वर्ण के ऊपर उसे लिखना चाहिए; यथा–**संस्कृतम्।**
- स्वर से युक्त 'र' इत्यादि वर्ण शुद्ध व्यंजनों के नीचे लिखे जाएँगे; उदाहरणार्थ **शुद्धम्** पद में द् + ध वर्ण हैं। देखने में 'द्' स्वरयुक्त लगता है व 'ध' स्वरहीन, क्योंकि हमें लगता है कि 'पूर्ण' का स्थान ऊपर होता है। संस्कृत भाषा हमें विनम्रता सिखाती है। **पूर्णाक्षर** (स्वरयुक्त अक्षर) को विनम्रता से नीचे झुककर और **शुद्ध** (स्वर से रहित) व्यंजन को ऊपर रखकर सहारा देने का विधान करती है।
- पूरे अंक पाने हों तो अभ्यास प्रतिदिन करना चाहिए।

© New Saraswati House (India) Private Limited

खण्ड 'क'

अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्

© New Saraswati House (India) Private Limited

© New Saraswati House (India) Private Limited

1 संस्कृतवर्णमाला

1. अक्षर ज्ञानम्

संस्कृत वर्णमाला को अल् भी कह सकते हैं। विभिन्न प्रकार की ध्वनियों को वर्ण कहते हैं। ध्वनियों के संयोग से ही विभिन्न शब्द बनते हैं। संस्कृत वर्णमाला में कुल ४६ वर्ण हैं।

अ–अचलः = पहाड़

आ–आसन्दिका = कुर्सी

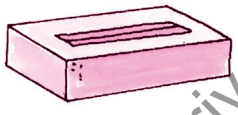

इ–इष्टका = ईंट

ई–ईश्वरः = भगवान

उ–उषा = सवेरा

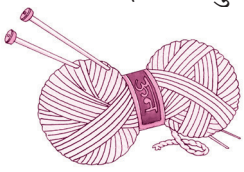

ऊ–ऊर्णः = ऊन

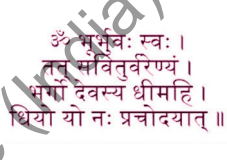

ऋ–ऋचा = ऋग्वेद का मंत्र

ऋ–ऋकारः = 'ऋ' अक्षर

ऌ–ऌकारः = 'ऌ' अक्षर

ए–एला = इलायची

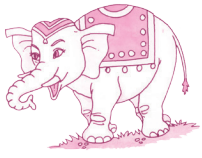

ऐ–ऐरावतः = इंद्र का हाथी

ओ–ओषधिः = दवाई

औ–औदनिकः = रसोइया

क्–कन्दुकम् = गेंद

ख्–खर्जूरम् = खजूर

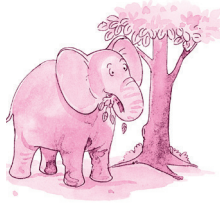

ग्–गजः = हाथी

© New Saraswati House (India) Private Limited

घ्–घटिका = घड़ी

ङ्–ङकार: = 'ङ' वर्ण

च्–चित्रक: = चीता

छ्–छत्रम् = छतरी/छाता

ज्–जम्बीर: = नीम्बू

झ्–झष: = मछली

ञ्–ञकार: ='ञ' वर्ण

ट्–टिट्टिभ:= टिड्डा

ठ्–ठक्कार: = ठठेरा

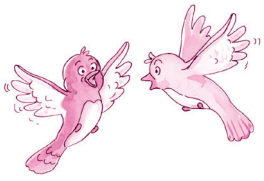

ड्–डय: = उड़ान

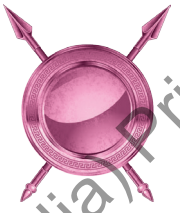

ढ्–ढालम् = ढाल

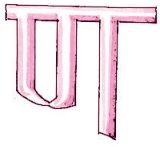

ण्–णकार:='ण' वर्ण

त्–तण्डुल: = चावल

थ्–थकार: = 'थ' वर्ण

द्–देश: = राष्ट्र/स्थान

ध्–धनम् = पैसा

न्–नापित: = नाई

प्–पथ: = रास्ता

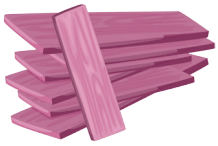

फ्–फलकम् = फट्टा

ब्–बदरम् = बेर

भ्–भल्लुक: = भालू

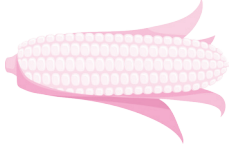

म्–मकाय = मकई

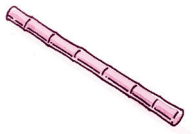

य्–यष्टि = छड़ी

र्–रजक: = धोबी

© New Saraswati House (India) Private Limited

ल्–लशुनः = लहसुन

व्–वस्त्रम् = कपड़ा

श्–शंखः = शंख

ष्–षट्पदः = भौंरा

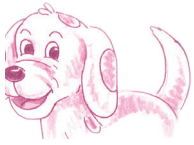

स्–सारमेयः = कुत्ता

ह्–हिमांशुः = चाँद

इस प्रकार संस्कृत वर्णमाला में 13 स्वर हैं :

स्वराः

जिन्हें बोलने के लिए किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती है, वे स्वर होते हैं। इन्हें अच् भी कहते हैं।

ह्रस्व-स्वराः = 5, जिनको बोलने में एक मात्रा का समय लगता है–अ, इ, उ, ऋ, ऌ	**दीर्घ-स्वराः** = 4, जिनको बोलने में दो मात्रा का (ह्रस्व से दो गुणा) समय लगता है–आ, ई, ऊ, ॠ	**संयुक्त-स्वराः** = 4, जो दो स्वरों को मिलाकर बने हों–ए, ऐ, ओ, औ	**प्लुत** = जिनको बोलने में ह्रस्व से तीन गुणा या उससे भी अधिक समय लगता है–ओ३म्, राऽऽऽम

33 व्यञ्जनानि = हल् – जिन्हें बिना स्वर की सहायता के नहीं बोला जा सकता।								
कु	=	कवर्गः =	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	
चु	=	चवर्गः =	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	
टु	=	टवर्गः =	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	स्पर्श व्यञ्जनानि = 25
तु	=	तवर्गः =	त्	थ्	द्	ध्	न्	
पु	=	पवर्गः =	प्	फ्	ब्	भ्	म्	
			य्	र्	ल्	व्		अन्तःस्थ-व्यञ्जनानि = 4
			श्	ष्	स्	ह्		ऊष्म-व्यञ्जनानि = 4
			ं (अनुस्वारः)		ः (विसर्गः)			स्वरों के बाद लगने वाले अयोगवाह इनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से नहीं होता।

© New Saraswati House (India) Private Limited

2. मात्रा-ज्ञानम्

जब किसी व्यंजन में कोई स्वर मिलाया जाता है तो उसका हल् चिह्न (्) लुप्त हो जाता है और वह स्वरयुक्त या सस्वर व्यंजन बन जाता है। हम इसे इस तरह भी समझ सकते हैं :

उदाहरण–

क्	+	अ	=	क	ब्	+	ऋ	=	बृ
ख्	+	आ	=	खा	भ्	+	ऌ	=	भ्ऌ
ग्	+	इ	=	गि	म्	+	ए	=	मे
घ्	+	ई	=	घी	य्	+	ऐ	=	यै
ङ्	+	उ	=	ङु	र्	+	ओ	=	रो
फ्	+	ऊ	=	फू	व्	+	औ	=	वौ
ल्	+	ऋ	=	लृ					

संयुक्त वर्णाः

दो व्यंजन मिलकर संयुक्त वर्ण बनाते हैं।

क्	+	ष्	=	= क्ष् क्ष् + अ = क्ष	द्	+	य्	=	= द्य् द्य् + अ = द्य
त्	+	र्	=	= त्र् त्र् + अ = त्र	स्	+	र्	=	= स्र् स्र् + अ = स्र
ज्	+	ञ्	=	= ज्ञ् ज्ञ् + अ = ज्ञ	प्	+	र्	=	= प्र् प्र् + अ = प्र
द्	+	व्	=	= द्व् द्व् + अ = द्व	क्	+	व्	=	= क्व् क्व् + अ = क्व
द्	+	ध्	=	= द्ध् द्ध् + अ = द्ध	श्	+	र्	=	= श्र् श्र् + अ = श्र
ह्	+	य्	=	= ह्य् ह्य् + अ = ह्य	ह्	+	र्	=	= ह्र् ह्र् + अ = ह्र

© New Saraswati House (India) Private Limited

हलन्त

हल् (्) हो जिस शब्द के अंत में उसे हलन्त कहते हैं; यथा–**देवम्** शब्द हलन्त है। इसका चिह्न (्) तिरछी रेखा के रूप में वर्णों के नीचे लगाया जाता है। शुद्ध अथवा हल् व्यंजनों के नीचे ही हल् चिह्न लगाया जाता है। वर्णों में स्वर मिलने के बाद इसका लोप हो जाता है। यथा–

ख् या ख + अ = ख

प् या प + अ = प

ग् या ग + अ = ग

3. वर्ण-संयोजनम्

दिए गए स्वर एवं व्यंजन वर्णों को जोड़कर सार्थक पद बनाने की प्रक्रिया को वर्ण-संयोजन कहते हैं।

उदाहरण :

1. क् + अ + ट् + अः = कटः
2. आ + र् + आ + म् + ए + ष् + उ = आरामेषु
3. आ + क् + आ + श् + अः = आकाशः
4. अ + ग् + न् + इः = अग्निः
5. आ + प् + अ + ण् + अः = आपणः
6. ई + र् + अ + न् + औ + क् + आ = ईरनौका
7. ख् + आ + ण् + ड् + अ + व् + अः = खाण्डवः
8. क् + अ + र् + ण् + आ + भ् + य् + आ + म् = कर्णाभ्याम्
9. क + अ + न् + द् + उ + क् + आ + न् + इ = कन्दुकानि
10. ख् + अ + र् + अः = खरः
11. आ + स् + अ + न् + द् + इ + क् + आः = आसन्दिकाः
12. ग् + ए + ह् + ए = गेहे
13. स् + आ + र् + इ + क् + आ + य् + आः = सारिकायाः
14. श् + उ + क् + अ + स् + य् + अ = शुकस्य
15. ह् + इ + म् + अ + क् + अ + र् + अ + म् = हिमकरम्
16. ल् + अ + व् + अ + ण् + अ + म् = लवणम्
17. व् + स् + उ + ध् + आ = वसुधा
18. म् + आ + त् + ऋ + भ् + ऊ + म् + इः = मातृभूमि
19. प् + इ + त् + उः = पितुः
20. अ + त् + इ + थ् + इः = अतिथिः

© New Saraswati House (India) Private Limited

21. ल् + अ + क् + ष् + म् + ई + ध् + अ + र् + अः = लक्ष्मीधरः
22. ह् + अ + स् + त् + ई = हस्ती
23. द् + ए + श् + अ + स् + य् + अ = देशस्य
24. प् + अ + र् + ण् + आ + ण् + इ = पर्णानि
25. ग् + अ + ण् + अ + न् + आ + म् = गणनाम्
26. व् + इ + ज् + ञ् + आ + न् + अ + म् = विज्ञानम्
27. द् + ए + श् + अ + स् + य् + अ = देशस्य
28. आ + स् + अ + न् + ए = आसने
29. स् + अ + ज् + ज् + अ + न् + अः = सज्जनः
30. उ + ल् + ल् + ए + ख् + अः = उल्लेखः
31. म् + ऊ + र् + ख् + आः = मूर्खाः
32. स् + उ + ख् + आ + न् + त् + अः = सुखान्तः
33. र् + अ + त् + न् + अ + म् = रत्नम्
34. श् + अ + र् + अः = शरः
35. अ + भ् + ई + ष् + ट् + अः = अभीष्टः
36. ऋ + ष् + इ + भ् + इः = ऋषिभिः
37. ज् + अ + न् + अ + न् + ई = जननी
38. प् + उ + र् + उ + ष् + ओ + त् + त् + अ + म् + अः = पुरुषोत्तमः
39. स + अ + त् + व् + अ + र् + अ + म् = सत्वरम्
40. भ् + आ + ष् + आ + ण् + आ + म् = भाषाणाम्
41. द् + ई + प् + अ + म् + आ + ल् + आ = दीपमाला
42. व् + अ + ल् + ल् + अ + र् + ई = वल्लरी
43. व् + य् + आ + क् + अ + र् + अ + ण् + अ + म् = व्याकरणम्
44. व् + अ + र् + अ + द् + आ = वरदा
45. म् + अ + ह् + ई + प् + अ + त् + इः = महीपतिः
46. ध् + ऊ + म् + अः = धूमः
47. त् + अ + म् + अ + स् + अः = तमसः
48. ब् + इ + ड् + आ + ल् + अः = बिडाल
49. क् + अ + व् + इः = कविः
50. ज् + अ + म् + ब् + ई + र् + अ + म् = जम्बीरम्
51. प् + ऊ + ज् + आ = पूजा
52. ए + क् + अ + त् + आ = एकता
53. स् + न् + ए + ह् + आ = स्नेहा
54. प् + र् + इ + य् + आ = प्रिया
55. स + अ + म् + ई + प् + अ + म् = समीपम्

© New Saraswati House (India) Private Limited

4. वर्ण-विन्यासः

शब्द जिन वर्णों से बना हो उन सबको अलग-अलग कर देना ही वर्ण-विन्यास अथवा वर्ण-विच्छेद कहलाता है।

उदाहरण :

1. बालकस्य = ब् + आ + ल् + अ + क् + अ + स् + य् + अ
2. लतायाम् = ल् + अ + त् + आ + य् + आ + म्
3. मुनिषु = म् + उ + न् + इ + ष् + उ
4. गर्वः = ग् + अ + र् + व + अः
5. वृक्षेषु = व + ऋ + क् + ष् + ए + ष् + उ
6. नयनाभ्याम् = न् + अ + य् + अ + न् + आ + भ् + य् + आ + म्
7. नद्याम् = न् + अ + द् + य् + आ + म्
8. मातृणाम् = म् + आ + त् + ऋ + ण् + आ + म्
9. बालिकायाः = ब् + आ + ल् + इ + क् + आ + य् + आः
10. छात्राणाम् = छ् + आ + त् + र् + आ + ण् + आ + म्
11. पुष्पेभ्यः = प् + उ + ष् + प् + ए + भ् + य् + अः
12. मीनायै = म् + ई + न् + आ + य् + ऐ
13. गजानाम् = ग् + अ + ज् + आ + न् + आ + म्
14. कपोतेषु = क् + अ + प् + ओ + त् + ए + ष् + उ
15. श्रीमान् = श् + र् + ई + म् + आ + न्
16. केयूराणि = क् + ए + य् + ऊ + र् + आ + ण् + इ
17. उष्ट्रौ = उ + ष् + ट् + र् + औ
18. वृक्षेषु = व् + ऋ + क् + ष् + ए + ष् + उ
19. सूर्यस्य = स् + ऊ + र् + य् + अ + स् + य् + अ
20. मृगात् = म् + ऋ + ग् + आ + त्
21. मयूराणाम् = म् + अ + य् + ऊ + र् + आ + ण् + आ + म्
22. पुस्तकेषु = प् + उ + स् + त् + अ + क् + ए + ष् + उ
23. फलानाम् = फ् + अ + ल् + आ + न् + आ + म्
24. लताभिः = ल् + अ + त् + आ + भ् + इः
25. फलाय = फ् + अ + ल् + आ + य् + अ
26. कुक्कुरात् = क् + उ + क् + क् + उ + र् + आ + त्

© New Saraswati House (India) Private Limited

27. श्रावणे = श् + र् + आ + व् + अ + ण् + ए
28. वृक्षाभ्याम् = व् + ऋ + क् + ष् + आ + भ् + य् + आ + म्
29. दम्पतिः = द् + अ + म् + प् + अ + त् + इः
30. प्रयासः = प् + र् + अ + य् + आ + स् + अः
31. प्रजा = प् + र् + अ + ज् + आ
32. नेत्रे = न् + ए + त् + र् + ए
33. प्रणामः = प् + र् + अ + ण् + आ + म् + अः
34. धरायाम् = ध् + अ + र् + आ + य् + आ + म्
35. वनस्थः = व् + अ + न् + अ + स् + थ् + अः
36. कमलानि = क् + अ + म् + अ + ल् + आ + न् + इ
37. शशकाः = श् + अ + श् + अ + क् + आः
38. शकटे = श् + अ + क् + अ + ट् + ए
39. तेनालीरामः = त् + ए + न् + आ + ल् + ई + र् + आ + म् + अः
40. देवालयः = द् + ए + व् + आ + ल् + अ + य् + अः
41. कृष्णः = क् + ऋ + ष् + ण् + अः
42. कलमः = क् + अ + ल् + अ + म् + अः
43. छागः = छ् + आ + ग् + अः
44. कृषकः = क् + ऋ + ष् + अ + क् + अः
45. ललने = ल् + अ + ल् + अ + न् + ए
46. आभूषणानि = आ + भ् + ऊ + ष् + अ + ण् + आ + न् + इ
47. इष्टकाभिः = इ + ष् + ट् + अ + क् + आ + भ् + इः
48. मात्रा = म् + आ + त् + र् + आ
49. शय्यासु = श् + अ + य् + य् + आ + स् + उ
50. घोटकाय = घ् + ओ + ट् + अ + क् + आ + य् + अ
51. सूदाः = स् + ऊ + द् + आः
52. भगिनीभिः = भ् + अ + ग् + इ + न् + ई + भ् + इः
53. विद्याम् = व् + इ + द् + य् + आ + म्
54. उदधिः = उ + द् + अ + ध् + इः
55. नाटकेषु = न् + आ + ट् + अ + क् + ए + षु

© New Saraswati House (India) Private Limited

ध्यातव्यम्

- एक ही ध्वनि से अनेक शब्द शुरू हो सकते हैं।
- संस्कृत भाषा में 'ऌ' एक स्वर है।
- ऌ स्वर का दीर्घ नहीं होता।
- प्रत्येक ध्वनि के उच्चारण के लिए हमारे मुख के अंदर विशेष अंग विशेष प्रयास करते हैं।
- शुद्ध व्यंजन स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते हैं।
- शुद्ध व्यंजनों के उच्चारण के लिए उससे पूर्व ध्वनि पर अधिक बल दिया जाता है।
- संयोग होने पर शुद्ध व्यंजनों को ऊपर तथा सस्वर व्यंजन को नीचे स्थान दिया जाता है।
- 'ध' तथा 'घ', ऌ तथा ल इत्यादि एक जैसे दिखने वाले वर्णों को ध्यान से बोलें व लिखें।
- अंतिमाक्षर का उच्चारण पूरे ध्यान से करें।
- ह्रस्व 'अ' से युक्त वर्णों के उच्चारण का भी विशेष ध्यान रखें, क्योंकि 'अ' की कोई मात्रा वर्णों के साथ नहीं लगती।
- वर्ण-विन्यास करते समय विसर्ग (:) को अंतिम स्वर के बाद ही लिखना चाहिए।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. विभिन्न ध्वनियाँ ही वर्ण कहलाती हैं।
2. ध्वनियों के संयोग को शब्द कहते हैं।
3. व्यंजन वर्ण 33 होते हैं।
4. स्वरों के बिना लिखे जाने पर व्यंजनों के नीचे हल् चिह्न (्) लगता है।
5. ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा, दीर्घ स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा तथा प्लुत स्वरों के उच्चारण में तीन मात्रा (ह्रस्व स्वर से तीन गुणा) का समय लगता है।
6. दो स्वरों के मिलने से संयुक्त स्वर बनते हैं।
7. अनुस्वार (ं) तथा विसर्ग (:) स्वरों के बाद लगते हैं। इनका उच्चारण व प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं होता।

© New Saraswati House (India) Private Limited

प्रायोगिकाभ्यासः

I. अधोदत्तं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायाः सहायतया रिक्तस्थानानि पूरयत।

(नीचे दिए गए चित्र को देखकर मंजूषा की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

1. = ...

2. = ...

3. 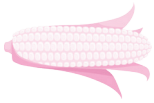 = ...

4. 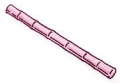 = ...

5. = ...

6. = ...

7. = ...

8. = ...

9. = ...

10. = ...

मीनः, यष्टिः, पलाण्डुः, आम्रम्, नापितः, देशः, ऋषिः, शुकः, रजकः, मकायः।

II. अधोलिखितेषु व्यञ्जनेषु स्वराणाम् संयोजनम् विभाजनम् वा कुरुत।

(नीचे लिखे व्यंजनों में स्वरों को जोड़िए अथवा अलग कीजिए।)

1. ज् + ऋ = ...
2. न् + ऐ = ...
3. स् + उ = ...
4. द् + ध् + ई = ...
5. व + आ = ...
6. म् + ऋ = ...
7. ह = ...
8. क + ऊ = ...
9. सौ = ...
10. ष्ट + इ = ...

© New Saraswati House (India) Private Limited

11. च् + ऐ = ... 16. प् + आ = ...

12. सा = ... 17. व् + ऋ = ...

13. त् + औ = ... 18. म् + इ = ...

14. ते = ... 19. टु = ...

15. ताः = ... 20. नु = ...

III. अधोलिखितेषु संयुक्तव्यञ्जनेषु के द्वे वर्णे स्तः? लिखत।

(नीचे लिखे संयुक्त व्यंजन किन दो वर्णों से मिलकर बने हैं? लिखिए।)

1. द्या = ... + ... + आ (द् + य्/द् + व)
2. द्वि = ... + ... + इ (द् + व्/द् + व)
3. ध्यै = ... + ... + ऐ (ध + य्/ध् + य्)
4. ज्ञ = ... + ... + अ (ग् + य/ज् + ञ्)
5. त्रि = ... + ... + इ (त् + र्/त + र्)
6. क्षा = ... + ... + आ (क् + श्/क् + ष)
7. द्धि = ... + ... + इ (द् + ध/द् + ध्)
8. प्र = ... + ... + अ (क् + र्/प् + र्)
9. क्रि = ... + ... + इ (क् + र्/क + र्)
10. ह्ल = ... + ... + अ (ह् + ल्/ह् + ल्)
11. ट्र = ... + ... + अ (ट् + र/द् + र्)
12. श्रु = ... + ... + उ (श् + र्/म् + र्)
13. घ्र = ... + ... + अ (घ् + र्/घ् + र्)
14. व्र = ... + ... + अ (व् + र/व् + र्)
15. न्या = ... + ... + आ (न् + य/न् + य्)
16. ह्र = ... + ... + अ (ह् + र्/ह्र + र्)

© New Saraswati House (India) Private Limited

IV. निम्नलिखितेषु वर्णेषु दीर्घस्वरान् पृथक् कृत्वा लिखत।

(निम्नलिखित वर्णों में से दीर्घ स्वरों को अलग करके लिखिए।)

आ, इ, ऊ, ए, अ, ई, ऐ, लृ, ॠ, उ, ॡ

.....

V. अधोलिखितवर्णेषु स्वरान् व्यञ्जनान् च पृथक् कृत्वा उचित वर्गेषु लिखत।

(नीचे लिखे वर्णों में से स्वर तथा व्यंजनों को अलग करके उचित वर्ग में लिखिए।)

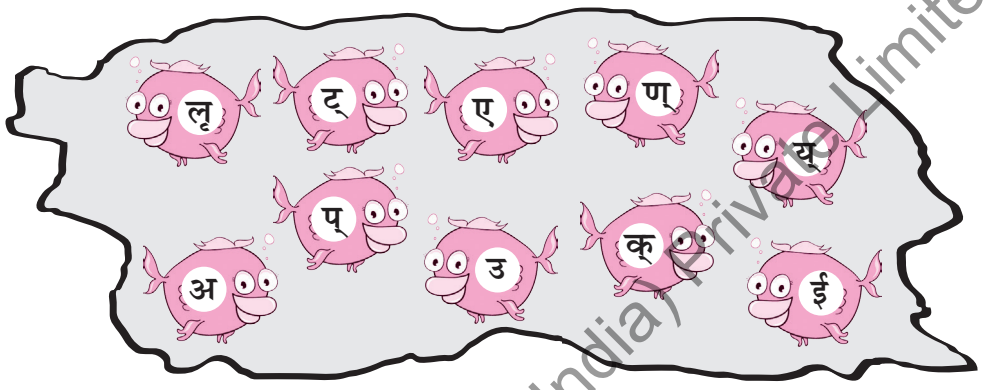

स्वराः	व्यञ्जनानि
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

VI. निम्नलिखितवर्गानां वर्णान् क्रमानुसारं लिखत।

(नीचे लिखे वर्गों के वर्ण को क्रम के अनुसार लिखिए।)

कवर्ग	=	ग्, ङ्, ख्, घ्, क्	.....
चवर्ग	=	छ्, झ्, च्, ज्, ञ्	.....
टवर्ग	=	ण्, ठ्, ढ्, ड्, ट्	.....
तवर्ग	=	थ्, न्, ध्, द्, त्	.....
पवर्ग	=	फ्, प्, म्, भ्, ब्	.....

© New Saraswati House (India) Private Limited

VII. अधोलिखितशब्दानाम् वर्णविश्लेषणम् कुरुत।

(नीचे लिखे शब्दों का वर्ण-विन्यास कीजिए।)

1. रश्मिः = ...
2. रजकेषु = ...
3. संस्कृतम् = ...
4. कृपया = ...
5. लक्ष्मीपतिः = ...
6. कृश् = ...
7. लम्बोदराय = ...
8. दण्डिनः = ...
9. चक्राणाम् = ...
10. ऐरावतः = ...

VIII. अधोलिखितवर्णानाम् संयोगं कुरुत।

(नीचे लिखे वर्णों को जोड़िए।)

1. छ् + अ + त् + र् + अ + म् = ...
2. अ + न् + इ + ल् + आः = ...
3. म् + अ + य् + ऊ + र् + औ = ...
4. क् + उ + क् + क् + उ + ट + अ + म् = ...
5. म् + ऋ + ग् + औ = ...
6. क् + अ + प् + ओ + त् + अ + म् = ...
7. क् + आ + क् + ई = ...
8. प् + इ + क् + अ + स् + य् + अ = ...
9. क् + अ + म् + अ + ल् + आ + न् + इ = ...
10. ल् + अ + त् + ए = ...

© New Saraswati House (India) Private Limited

IX. निम्नलिखितान् वर्णान् उचितशीर्षकस्य अधः लिखत।

(नीचे लिखे पदों को उचित शीर्षक के नीचे लिखिए।)

ओ३, ई, उ, ॠ, क्, ण्, ट्, हेऽऽऽ, प्, फ्, य्, अ, अं, ऊ, ख्, ठ्, द्, आऽऽ, इ, ऋ, ऌ, ग्, न्, अः, छ्, ञ्, ङ्, घ्, ज्, च्, ड्, त्, ऐ, झ्, ओ, थ्, ढ्, ब्, ध्, औ, भ्, म्, श्, ल्, स्, र्, ष्, व्, ह्

ह्रस्वस्वराः	दीर्घस्वराः	संयुक्तस्वराः	प्लुत स्वराः
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

कवर्गः	चवर्गः	टवर्गः	तवर्गः
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

पवर्गः	अन्तस्थ-व्यञ्जनानि	ऊष्म-व्यञ्जनानि	अयोगवाहाः
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

© New Saraswati House (India) Private Limited

2 शब्दरूप-प्रकरणम्

संस्कृत भाषा में निम्नलिखित तीन लिंग होते हैं :

1. पुंल्लिङ्ग 2. स्त्रीलिङ्ग 3. नपुंसकलिङ्ग।

प्रत्येक लिंग के शब्दों के रूप अलग-अलग चलते हैं। जिस वर्ण से शब्द समाप्त हो रहा हो, उस वर्ण के पीछे **कार** लिख देते हैं; जैसे-'अ' को 'अकार,' 'इ' 'ई' तथा 'त्' को क्रमशः 'इकार', 'ईकार' तथा 'तकार' कह सकते हैं।

हम यह कह सकते हैं कि संस्कृत में अकेले वर्ण को भाषा में चलने के लिए

दे दी जाती है; यथा-'च्' + कार = चकार 'आ' + कार = आकार इत्यादि।

इसी तरह आकारान्त = आ से अन्त होने वाले, अकारान्त = 'अ' से अन्त होने वाले, इकारान्त = इ से अन्त होने वाले शब्द हैं।

समान ध्वनि (अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, तकारान्त इत्यादि) एवं समान लिंग (पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग) के सभी शब्दों के रूप (कभी-कभी थोड़े से अंतर के साथ) प्रायः एक जैसे ही चलते हैं।

© New Saraswati House (India) Private Limited

1. अकारान्त-पुंल्लिङ्ग-शब्दाः

'अ' अर्थात् अकार से अन्त होने वाले शब्द (अकार + अन्त) अकारान्त कहलाते हैं। अकारान्त पुंल्लिंग शब्दों को विसर्ग (:) लगाकर लिखा जाता है। कुछ अकारान्त पुंल्लिंग शब्द इस प्रकार हैं :

देशः = राष्ट्र

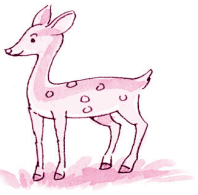

मृगः = हिरन

बालः = लड़का

मूषकः = चूहा

मकरः = मगरमच्छ

हंसः = हंस

शिक्षकः = आचार्य

अनलः = आग

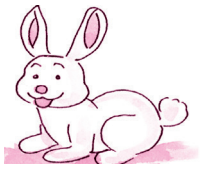

शशकः = खरगोश

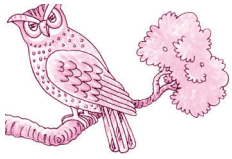

उलूकः = उल्लू

सागरः = समुद्र

अश्वः = घोड़ा

देवः = देवता

व्याघ्रः = बाघ

वानरः/मरकटः = बंदर

पुत्रः/सुतः = बेटा

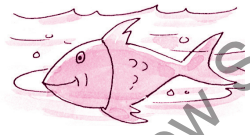

मीनः = मछली

नृपः = राजा

बिडालः = बिल्ला

कुक्कुटः = मुर्गा

कुक्कुरः = कुत्ता

शुकः = तोता

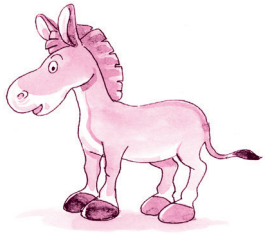

रासभः/गर्दभः/खरः = गधा

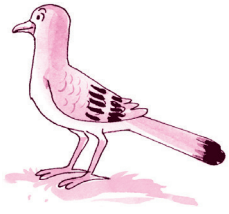

कपोतः = कबूतर

© New Saraswati House (India) Private Limited

आवास: = घर

पिक:/ कोकिल: = कोयल

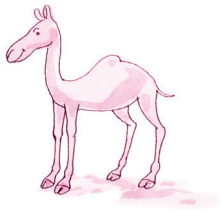

उष्ट्र: = ऊँट

मेघ: = बादल

पवन: = हवा

श्येन: = बाज

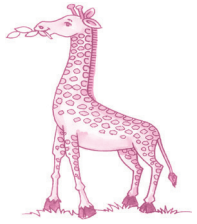

उष्ट्रग्रीव:= जिराफ

वक: = बगुला

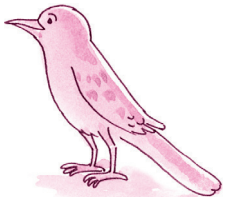

चटक: = चिड़िया

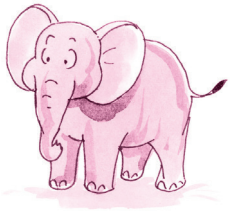

गज: = हाथी

रजक: = धोबी

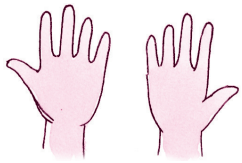

हस्त:/कर: = हाथ

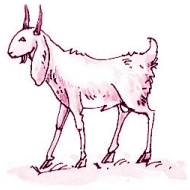

छाग:/अज: = बकरा

केश: = बाल

सिंह: = शेर

कृषक: = किसान

खग:/विहग: = पक्षी

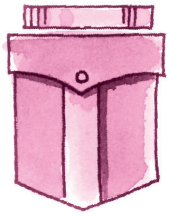

स्यूत: = जेब/ पाकेट/थैला

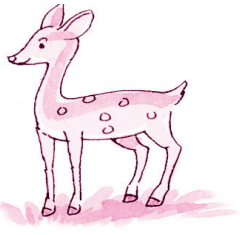

रोहित: = लाल हिरण

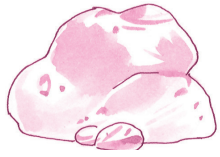

लाहल: = कोयला

© New Saraswati House (India) Private Limited

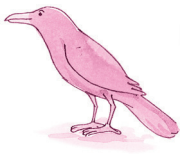

काकः = कौआ

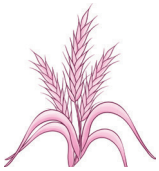

यवः = जौ

चमसः = बड़ा चम्मच

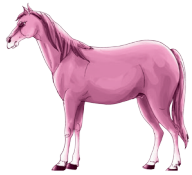

घोटकः = घोड़ा

तरुः = पेड़

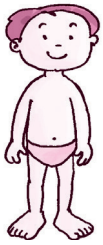

कायः = शरीर

ऋक्षः/भल्लुकः = भालू

सूदः/पाचकः = रसोइया

मण्डूकः = मेंढक

पादपः = पौधा

यूषः = रस/जूस

घटः = घड़ा

चणकः = चना

ठक्कारः = ठठेरा

कुम्भकारः = कुम्हार

अङ्गुष्ठः = अँगूठा

सौचिकः = दर्जी

नर्तकः = नाचने वाला

अश्वत्थः = पीपल

पण्यकः = दुकानदार

शार्दूलः = चीता

चरणः = पाँव

अवकरः = कूड़ा

क्रोडः = गोद

© New Saraswati House (India) Private Limited

इन सभी शब्दों के रूप प्रायः एक समान चलेंगे। उदाहरण के लिए अर्थ के साथ यह शब्द-रूप देखिए:

शशक शब्द के रूप

कारक	विभक्तियाँ	चिह्न	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता	प्रथमा	ने (–)	शशकः (एक खरगोश ने)	शशकौ (दो खरगोशों ने)	शशकाः (अनेक खरगोशों ने)
कर्म	द्वितीया	को	शशकम् (एक खरगोश को)	शशकौ (दो खरगोशों को)	शशकान् (अनेक खरगोशों को)
करण	तृतीया	से, के द्वारा	शशकेन (एक खरगोश से/के द्वारा)	शशकाभ्याम् (दो खरगोशों से/के द्वारा)	शशकैः (अनेक खरगोशों से/के द्वारा)
सम्प्रदान	चतुर्थी	के लिए	शशकाय (एक खरगोश के लिए)	शशकाभ्याम् (दो खरगोशों के लिए)	शशकेभ्यः अनेक खरगोशों के लिए
अपादान	पंचमी	से (अलग)	शशकात् [एक खरगोश से (अलग)]	शशकाभ्याम् (दो खरगोशों से)	शशकेभ्यः (अनेक खरगोशों से)
संबंध	षष्ठी	का, के की, रा, रे, री	शशकस्य (एक खरगोश का/के/की)	शशकयोः (दो खरगोशों का/के/की)	शशकानाम् (अनेक खरगोशों का/के/की)
अधिकरण	सप्तमी	में, पर	शशके (एक खरगोश में/पर)	शशकयोः (दो खरगोशों में/पर)	शशकेषु (अनेक खरगोशों में/पर)
सम्बोधन	–	हे, भो, अरे	हे शशक! (अरे एक खरगोश!)	हे शशकौ! (हे दो खरगोशो!)	हे शशकाः! (हे अनेक खरगोशो!)

© New Saraswati House (India) Private Limited

ठीक इसी प्रकार अन्य रूपों के अर्थ भी जाने जा सकते हैं। कुछ अन्य रूप देखिए :

मेघ (बादल) अकारान्त पुंल्लिङ्ग

विभक्तियाँ	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मेघः	मेघौ	मेघाः
द्वितीया	मेघम्	मेघौ	मेघान्
तृतीया	मेघेन	मेघाभ्याम्	मेघैः
चतुर्थी	मेघाय	मेघाभ्याम्	मेघेभ्यः
पंचमी	मेघात्	मेघाभ्याम्	मेघेभ्यः
षष्ठी	मेघस्य	मेघयोः	मेघानाम्
सप्तमी	मेघे	मेघयोः	मेघेषु
सम्बोधन	हे मेघ!	हे मेघौ!	हे मेघाः!

वृक्ष (पेड़) अकारान्त पुंल्लिङ्ग

विभक्तियाँ	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वृक्षः	वृक्षौ	वृक्षाः
द्वितीया	वृक्षम्	वृक्षौ	वृक्षान्
तृतीया	वृक्षेण	वृक्षाभ्याम्	वृक्षैः
चतुर्थी	वृक्षाय	वृक्षाभ्याम्	वृक्षेभ्यः
पंचमी	वृक्षात्	वृक्षाभ्याम्	वृक्षेभ्यः
षष्ठी	वृक्षस्य	वृक्षयोः	वृक्षाणाम्
सप्तमी	वृक्षे	वृक्षयोः	वृक्षेषु
सम्बोधन	हे वृक्ष!	हे वृक्षौ!	हे वृक्षाः!

इसी तरह मेघ या वृक्ष इत्यादि के स्थान पर किसी दूसरे अकारान्त पुंल्लिंग शब्द को रखकर रूप बनाए जा सकते हैं। उदाहरण–अश्वः अश्वौ अश्वाः इत्यादि।

अज (बकरा) अकारान्त पुंल्लिङ्ग

विभक्तियाँ	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अजः	अजौ	अजाः
द्वितीया	अजम्	अजौ	अजान्
तृतीया	अजेन	अजाभ्याम्	अजैः
चतुर्थी	अजाय	अजाभ्याम्	अजेभ्यः
पंचमी	अजात्	अजाभ्याम्	अजेभ्यः
षष्ठी	अजस्य	अजयोः	अजानाम्
सप्तमी	अजे	अजयोः	अजेषु
सम्बोधन	हे अज!	हे अजौ!	हे अजाः!

©New Saraswati House (India) Private Limited

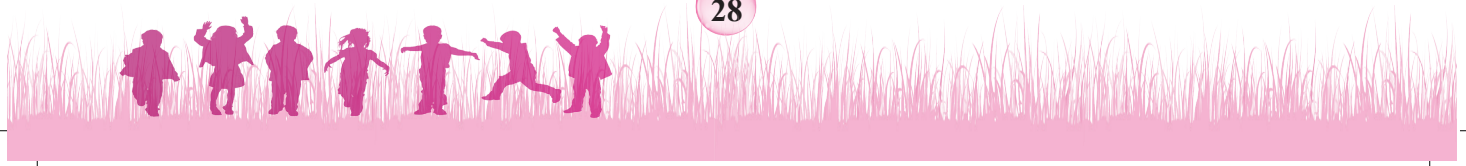

देव (देवता) अकारान्त पुंल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	देव:	देवौ	देवा:
द्वितीया	देवम्	देवौ	देवान्
तृतीया	देवेन	देवाभ्याम्	देवै:
चतुर्थी	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्य:
पंचमी	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्य:
षष्ठी	देवस्य	देवयो:	देवानाम्
सप्तमी	देवे	देवयो:	देवेषु
सम्बोधन	हे देव!	हे देवौ!	हे देवा:!

राम (अकारान्त पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राम:	रामौ	रामा:
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामै:
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्य:
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्य:
षष्ठी	रामस्य	रामयो:	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयो:	रामेषु
संबोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामा:!

विशेष–रामेण तथा रामाणाम् में **न** के स्थान पर **ण** है, क्योंकि नियम है कि **र्, ऋ** तथा **ष्** के बाद यदि **न** आ जाए तो **न** का **ण** हो जाता है। किंतु **न्** के हलन्त होने पर **न्** का **ण** नहीं होता; यथा–रामान्।

2. आकारान्त-स्त्रीलिङ्ग-शब्दा:

'आ' अर्थात् आकार से अंत होने वाले शब्द आकारान्त कहलाते हैं। कुछ आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द इस प्रकार हैं :

©New Saraswati House (India) Private Limited

इन्दिरा/रमा = लक्ष्मी

निशा = रात

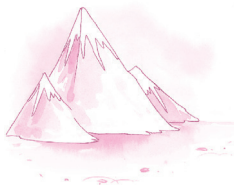

शिखा = चोटी

माला = हार

शाला = घर

पाठशाला = विद्यालय

भार्या = पत्नी

कन्या = लड़की, बाला

छात्रा = पढ़ने वाली लड़की

क्रीडा = खेल

भिक्षा = भीख

ईरनौका = मोटरबोट

कला = मिनट

जिह्वा/रसना = जीभ

ललना/ महिला = औरत

चटका = चिड़िया

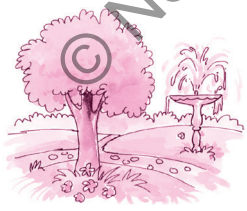

वाटिका = बगीचा

धरा = धरती

वर्षा = बरसात

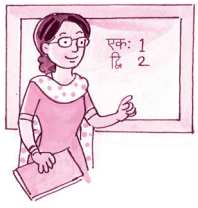

अध्यापिका = शिक्षिका

© New Saraswati House (India) Private Limited

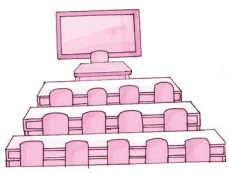

कक्षा = कमरा, श्रेणी

प्रजा = संतान

शिला = पत्थर

बाला/बालिका = लड़की

कला = हुनर/गुण

ग्रीवा = गर्दन

कलिका = कली

मक्षिका = मक्खी

मुक्ता = मोती

सारिका = मैना

शाटिका = साड़ी

दोला = झूला

इन सभी के रूप एक समान चलेंगे। कुछ आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप इस प्रकार हैं :

लता (बेल) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पंचमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

© New Saraswati House (India) Private Limited

रमा (लक्ष्मी) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पंचमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे !	हे रमे !	हे रमाः !

निशा (रात) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालिका	बालिके	बालिकाः
द्वितीया	बालिकाम्	बालिके	बालिकाः
तृतीया	बालिकया	बालिकाभ्याम्	बालिकाभिः
चतुर्थी	बालिकायै	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
पंचमी	बालिकायाः	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
षष्ठी	बालिकायाः	बालिकयोः	बालिकानाम्
सप्तमी	बालिकायाम्	बालिकयोः	बालिकासु
सम्बोधन	हे बालिके !	हे बालिके !	हे बालिकाः !

3. अकारान्त-नपुंसकलिङ्ग-शब्दाः

कुछ अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द इस प्रकार हैं :

फलम् = फल

उद्यानम् = बगीचा

पत्रम् = पत्ता

पुष्पम् = फूल

गृहम् = घर

मुखम् = चेहरा (मुँह)

आम्रम् = आम

वनम् = जंगल

© New Saraswati House (India) Private Limited

वसनम्/वस्त्रम् = कपड़ा

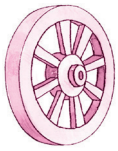

चक्रम् = पहिया

धनम् = धन

रत्नम् = रत्न

पुण्यम् = पुण्य

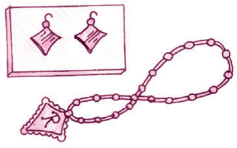

स्वर्णम् = सोना

गगनम् = आकाश

कार्यम् = काम

नगरम् = शहर

उदरम् = पेट

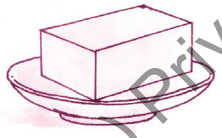

नवनीतम् = मक्खन

कमलम् = कमल का फूल

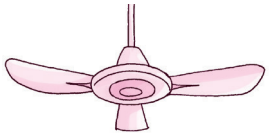

व्यजनम् = पंखा

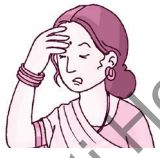

ललाटम् = माथा

दाडिमम् = अनार

मूलकम् = मूली

आर्द्रकम् = अदरक

लशुनम् = लहसुन

गृञ्जनम् = गाजर

अक्षोटम् = अखरोट

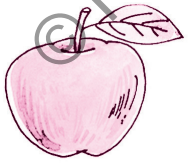

सेवम् = सेब

तारबूजम् = तरबूज

वातादम् = बादाम

तूतम् = शहतूत

© New Saraswati House (India) Private Limited

नारिकेलम् = नारियल

कूर्चम् = दाढ़ी

द्विदलम् = दाल

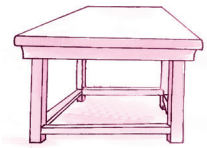

फलकम् = मेज

मित्रम् = दोस्त

नयनम्/नेत्रम्/लोचनम् = आँख

भोजनम् = खाना

आभूषणम् = गहना

फेनकम् = साबुन

छत्रम् = छतरी

हिमम् = बर्फ

वायुयानम् = हवाई जहाज़

जलम् = पानी

कन्दुकम् = गेंद

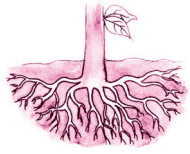

मूलम् = जड़

नारङ्गम् = संतरा

भवनम् = मकान

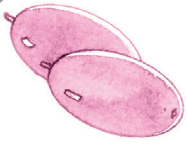

जम्बूफलम् = जामुन

बदरीफलम् = बेर

शीर्षम् = सिर

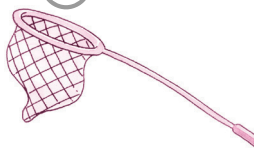

जालम् = जाली

अन्नम् = अनाज

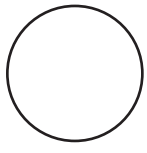

वर्तुलम् = गोल

मुकुटम् = मुकुट

© New Saraswati House (India) Private Limited

इन सभी के रूप प्रथमा, द्वितीया तथा संबोधन को छोड़कर प्रायः अकारान्त पुंल्लिग के समान चलते हैं। कुछ अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप इस प्रकार हैं :

फल (फल) अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पंचमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
संबोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

पुस्तक (किताब) अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
द्वितीया	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
तृतीया	पुस्तकेन	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकैः
चतुर्थी	पुस्तकाय	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकेभ्यः
पंचमी	पुस्तकात्	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकेभ्यः
षष्ठी	पुस्तकस्य	पुस्तकयोः	पुस्तकानाम्
सप्तमी	पुस्तके	पुस्तकयोः	पुस्तकेषु
संबोधन	हे पुस्तक!	हे पुस्तके!	हे पुस्तकानि!

मित्र (दोस्त) अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मित्रम्	मित्रे	मित्राणि
द्वितीया	मित्रम्	मित्रे	मित्राणि
तृतीया	मित्रेण	मित्राभ्याम्	मित्रैः
चतुर्थी	मित्राय	मित्राभ्याम्	मित्रेभ्यः
पंचमी	मित्रात्	मित्राभ्याम्	मित्रेभ्यः
षष्ठी	मित्रस्य	मित्रयोः	मित्राणाम्
सप्तमी	मित्रे	मित्रयोः	मित्रेषु
संबोधन	हे मित्र!	हे मित्रे!	हे मित्राणि!

© New Saraswati House (India) Private Limited

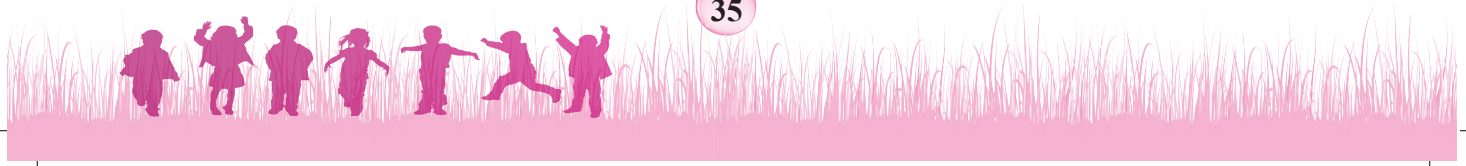

4. सर्वनामशब्दाः

तत् = वह (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तत् = वह (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तत् = वह (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

(शेष रूप पुंल्लिंग के समान होते हैं ।)

एतत् = यह (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः

© New Saraswati House (India) Private Limited

चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पंचमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

एतत् = यह (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पंचमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

एतत् = यह (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्	एते	एतानि

(शेष रूप पुंल्लिंग के समान होंगे।)

किम् = कौन (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

© New Saraswati House (India) Private Limited

किम् = क्या (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

सर्वनाम शब्दों के संबोधन नहीं हो सकते। संबोधन केवल संज्ञा तथा विशेषण आदि शब्दों के साथ आएँगे।

किम् = क्या (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

(द्वितीया विभक्ति के बाद शेष पुंल्लिंग के समान हैं।)

अस्मद् = मैं, हम (दोनों लिंगों में समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् (मा)	आवाम् (नौ)	अस्मान् (नः)
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम् (मे)	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मभ्यम् (नः)
पंचमी	मत्	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मत्
षष्ठी	मम (मे)	आवयोः (नौ)	अस्माकम् (नः)
सप्तमी	मयि	आवयोः (नौ)	अस्मासु

© New Saraswati House (India) Private Limited

युष्मद् = तू, तुम (दोनों लिंगों में समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम् (त्वा)	युवाम्	युष्मान् (वः)
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः (नः)
चतुर्थी	तुभ्यम् (ते)	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम् (वः)
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव (ते)	युवयोः	युष्माकम् (वः)
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

यत् = जो (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पंचमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

यत् = जो (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पंचमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

© New Saraswati House (India) Private Limited

यत् = जो (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

(शेष रूप पुंल्लिंग के समान होंगे।)

ध्यातव्यम्

- प्राय: लिंग तथा अंतिम वर्ण समान होने पर मूल शब्द को बदलकर दूसरा शब्द उन्हीं मात्राओं के साथ रखने से किसी भी शब्द के रूप बनाए जा सकते हैं।
- पहले विभक्ति के अनुसार रूप याद करें। फिर वचनानुसार अंतर को समझ लीजिए।
- वर्तनी का विशेष रूप से ध्यान रखें। यदि मात्राओं व वर्णों का उच्चारण ठीक होगा तो वर्तनी भी शुद्ध होगी।

स्मरणीया: बिन्दव:

1. संस्कृत भाषा में तीन लिंग होते हैं।
2. नपुंसकलिंग अकारान्त के रूप तृतीया से सप्तमी विभक्ति तक प्राय: अकारान्त पुंल्लिंग के समान ही चलते हैं। केवल प्रथमा, द्वितीया तथा संबोधन के रूप अलग होंगे।
3. सर्वनाम शब्दों के संबोधन नहीं हो सकते।
4. 'ऋ' 'र्' तथा 'ष' के बाद यदि न आ जाए तो वह 'ण' हो जाता है। यह परिवर्तन 'न्' के साथ किसी स्वर के होने पर ही होता है।
5. तत्, एतत्, यत्, किम् सर्वनाम शब्दों के रूप तीनों लिंगों में चलते हैं।
6. युष्मद् तथा अस्मद् के रूप दोनों लिंगों में समान होते हैं।

© New Saraswati House (India) Private Limited

प्रायोगिकाभ्यासः

I. मञ्जूषातः रूपाणि चित्वा शब्दरूपपूर्तिम् कुरुत।

(मंजूषा से रूप चुनकर शब्द रूपों को पूर्ण कीजिए।)

1. नर = मनुष्य (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नरः	1.....	नराः
द्वितीया	नरम्	नरौ	2.....
तृतीया	3.....	नराभ्याम्	नरैः
चतुर्थी	नराय	4.....	5.....
पंचमी	नरात्	6.....	नरेभ्यः
षष्ठी	नरस्य	7.....	8.....
सप्तमी	नरे	9.....	नरेषु
सम्बोधन	हे नर!	10.....	हे नराः!

हे नरौ, नरयोः, नराणाम्, नरयोः, नराभ्याम्, नरौ, नरेभ्यः, नराभ्याम्, नरेण, नरान्

2. कच्छप = कछुआ (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	1.....	कच्छपौ	कच्छपाः
द्वितीया	कच्छपम्	2.....	कच्छपान्
तृतीया	कच्छपेन	3.....	कच्छपैः
चतुर्थी	4.....	कच्छपाभ्याम्	कच्छपेभ्यः
पंचमी	कच्छपात्	कच्छपाभ्याम्	5.....
षष्ठी	6.....	7.....	कच्छपानाम्
सप्तमी	8.....	कच्छपयोः	9.....
संबोधन	हे कच्छप!	10.....	हे कच्छपाः!

कच्छपौ, हे कच्छपौ!, कच्छपयोः, कच्छपाय, कच्छपेषु,
कच्छपः, कच्छपाभ्याम्:, कच्छपस्य, कच्छपेभ्यः, कच्छपे

© New Saraswati House (India) Private Limited

3. बाल = बालक (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	1.....
द्वितीया	2.....	बालकौ	बालकन्
तृतीया	3.....	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	4.....	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पंचमी	5.....	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	6.....	बालकयोः	7.....
सप्तमी	8.....	बालकयोः	9.....
सम्बोधन	10.....	हे बालकौ !	हे बालकाः !

हे बालक !, बालके, बालकेषु, बालकानाम्, बालकाः, बालकस्य, बालकम्, बालकाय, बालकेन, बालकात्

4. सागर = समुद्र (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सागरः	1.....	सागराः
द्वितीया	2.....	सागरौ	सागरान्
तृतीया	सागरेण	3.....	सागरैः
चतुर्थी	सागराय	सागराभ्याम्	4.....
पंचमी	सागरात्	सागराभ्याम्	5.....
षष्ठी	सागरस्य	6.....	सागराणाम्
सप्तमी	7.....	सागरयोः	8.....
सम्बोधन	हे सागर !	9.....	10.....

सागरस्य, सागरौ, हे सागराः !, सागरम्, सागरेभ्यः, सागराभ्याम्, सागरेषु, सागरेभ्यः, हे सागरौ !, सागरयोः, सागरे

© New Saraswati House (India) Private Limited

5. छात्र = विद्यार्थी (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	छात्रः	1.....	2.....
द्वितीया	3.....	छात्रौ	4.....
तृतीया	छात्रेण	छात्राभ्याम्	5.....
चतुर्थी	छात्राय	छात्राभ्याम्	6.....
पंचमी	7.....	छात्राभ्याम्	छात्रेभ्यः
षष्ठी	8.....	छात्रयोः	9.....
सप्तमी	छात्रे	छात्रयोः	10.....
सम्बोधन	हे छात्र!	हे छात्रौ!	हे छात्राः!

छात्रम्, छात्रेभ्यः, छात्रेषु, छात्रौ, छात्रस्य, छात्रान्, छात्रैः, छात्रात्, छात्राः, छात्राणाम्

II. मञ्जूषातः रूपाणि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से रूपों को चुनकर रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।)

1. पत्र = पत्ता (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	1.....	पत्रे	पत्राणि
द्वितीया	2.....	3.....	4.....
तृतीया	पत्रेण	पत्राभ्याम्	पत्रैः
चतुर्थी	5.....	पत्राभ्याम्	पत्रेभ्यः
पंचमी	6.....	7.....	पत्रेभ्यः
षष्ठी	8.....	पत्रयोः	पत्राणाम्
सप्तमी	9.....	पत्रयोः	10.....
सम्बोधन	हे पत्र!	हे पत्रे!	हे पत्राणि!

पत्रम्, पत्रे, पत्राणाम्, पत्राणि, पत्राभ्याम्, पत्रस्य, पत्रेषु, पत्रे, पत्रम्, पत्राय, पत्रात्

© New Saraswati House (India) Private Limited

2. पुष्प = फूल (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुष्पम्	1.....	पुष्पाणि
द्वितीया	2.....	पुष्पे	पुष्पाणि
तृतीया	3.....	पुष्पाभ्याम्	4.....
चतुर्थी	पुष्पाय	5.....	पुष्पेभ्यः
पंचमी	पुष्पात्	पुष्पाभ्याम्	पुष्पेभ्यः
षष्ठी	पुष्पस्य	पुष्पयोः	6.....
सप्तमी	पुष्पे	7.....	8.....
सम्बोधन	हे पुष्प!	9.....	10.....

पुष्पयोः, पुष्पे, हे पुष्पाणि!, पुष्पम्, पुष्पाणाम्, पुष्पैः, पुष्पाभ्याम्, हे पुष्पे!, पुष्पेषु, पुष्पेण

3. वन = जंगल (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	1.....	वने	वनानि
द्वितीया	वनम्	2.....	वनानि
तृतीया	वनेन	वनाभ्याम्	3.....
चतुर्थी	4.....	वनाभ्याम्	वनेभ्यः
पंचमी	5.....	वनाभ्याम्	वनेभ्यः
षष्ठी	वनस्य	वनयोः	6.....
सप्तमी	वने	7.....	8.....
सम्बोधन	9.....	हे वने!	10.....

हे वनानि!, वने, वनैः, हे वन!, वनाय, वनम्, वनानाम्, वनात्, वनयोः, वनेषु

© New Saraswati House (India) Private Limited

4. वस्त्र = कपड़ा (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	1.....	वस्त्रे	2.....
द्वितीया	वस्त्रम्	3.....	4.....
तृतीया	5.....	वस्त्राभ्याम्	6.....
चतुर्थी	वस्त्राय	वस्त्राभ्याम्	7.....
पंचमी	8.....	वस्त्राभ्याम्	9.....
षष्ठी	वस्त्रस्य	वस्त्रयोः	वस्त्राणाम्
सप्तमी	वस्त्रे	वस्त्रयोः	10.....
सम्बोधन	हे वस्त्र !	हे वस्त्रे !	हे वस्त्राणि !

वस्त्रे, वस्त्रेषु, वस्त्राणि, वस्त्रेभ्यः, वस्त्राणि, वस्त्रात्, वस्त्रेभ्यः, वस्त्रम्, वस्त्रेण, वस्त्रैः

5. जल = पानी (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जलम्	जले	1.....
द्वितीया	2.....	जले	जलानि
तृतीया	जलेन	3.....	जलैः
चतुर्थी	जलाय	जलाभ्याम्	4.....
पंचमी	5.....	जलाभ्याम्	जलेभ्यः
षष्ठी	जलस्य	6.....	7.....
सप्तमी	8.....	जलयोः	9.....
सम्बोधन	10.....	हे जले !	हे जलानि !

जलाभ्याम्, हे जल !, जलानि, जलम्, जलेषु, जलेभ्यः, जलयोः, जलात्, जलानाम्, जले

© New Saraswati House (India) Private Limited

III. मञ्जूषातः उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित पद चुनकर रिक्त स्थान पूर्ण कीजिए।)

1. बाला = लड़की

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	1.....	बाले	बालाः
द्वितीया	बालाम्	बाले	बालाः
तृतीया	बालया	बालाभ्याम्	2.....
चतुर्थी	बालायै	3.....	बालाभ्यः
पंचमी	4.....	5.....	6.....
षष्ठी	7.....	बालयोः	8.....
सप्तमी	9.....	बालयोः	10.....
सम्बोधन	हे बाले!	हे बाले!	हे बाला!

बालाभ्यः, बालाभ्याम्, बालायाः, बालानाम्, बालाभिः, बालासु, बाला, बालायाः, बालाभ्याम्, बालायाम्

2. कथा = कहानी

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	1.....	कथे	2.....
द्वितीया	कथाम्	3.....	कथाः
तृतीया	4.....	5.....	6.....
चतुर्थी	कथायै	7.....	कथाभ्यः
पंचमी	8.....	कथाभ्याम्	कथाभ्यः
षष्ठी	कथायाः	9.....	कथानाम्
सप्तमी	कथायाम्	10.....	कथासु
सम्बोधन	हे कथे!	हे कथे!	हे कथाः!

कथाभिः, कथयोः, कथा, कथया, कथे, कथयोः, कथाः, कथाभ्याम्, कथाभ्याम्, कथायाः

© New Saraswati House (India) Private Limited

3. पाठशाला = विद्यालय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पाठशाला	पाठशाले	1.....
द्वितीया	पाठशालाम्	2.....	पाठशाला:
तृतीया	3.....	पाठशालाभ्याम्	पाठशालाभि:
चतुर्थी	पाठशालायै	4.....	पाठशालाभ्य:
पंचमी	5.....	पाठशालाभ्याम्	6.....
षष्ठी	पाठशालाया:	7.....	8.....
सप्तमी	9.....	पाठशालयो:	10.....
सम्बोधन	हे पाठशाले!	हे पाठशाले!	हे पाठशाला:!

पाठशाला:, पाठशालायाम्, पाठशालया, पाठशालाभ्याम्, पाठशालासु, पाठशालयो:, पाठशालानाम्, पाठशालाभ्य:, पाठशालाया:, पाठशाले

4. कक्षा = श्रेणी, कमरा

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कक्षा	कक्षे	1.....
द्वितीया	कक्षाम्	कक्षे	2.....
तृतीया	3.....	4.....	कक्षाभि:
चतुर्थी	5.....	कक्षाभ्याम्	6.....
पंचमी	कक्षाया:	कक्षाभ्याम्	7.....
षष्ठी	8.....	कक्षयो:	9.....
सप्तमी	कक्षायाम्	10.....	कक्षासु
सम्बोधन	हे कक्षे!	हे कक्षे!	हे कक्षा:!

कक्षाया:, कक्षाभ्याम्, कक्षा:, कक्षयो:, कक्षाभ्य:, कक्षाणाम्, कक्षा:, कक्षाभ्य: कक्षायै, कक्षया

©New Saraswati House (India) Private Limited

IV. मञ्जूषातः उचितं सर्वनाम-शब्दरूपं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित सर्वनाम शब्द रूप चुनकर रिक्त स्थानों को भरिए।)

1. तत् = वह (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	1.....	ते
द्वितीया	2.....	तौ	3.....
तृतीया	तेन	4.....	5.....
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	6.....
पंचमी	7.....	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	8.....	9.....
सप्तमी	10.....	तयोः	तेषु

तेषाम्, तान्, तौ, ताभ्याम्, तम्, तैः, तस्मात्, तेभ्यः, तस्मिन्, तयोः

2. तत् = वह (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	1.....	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	2.....
तृतीया	3.....	4.....	5.....
चतुर्थी	6.....	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	7.....	ताभ्याम्	8.....
षष्ठी	9.....	तयोः	तासाम्
सप्तमी	10.....	तयोः	तासु

ताभ्याम्, तया, ते, ताभिः, ताः, ताभ्यः, तस्याः, तस्याः, तस्याम्, तस्यै

© New Saraswati House (India) Private Limited

3. यत् = जो (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	1.....	ये
द्वितीया	2.....	यौ	यान्
तृतीया	येन	3.....	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	4.....
पंचमी	5.....	6.....	येभ्यः
षष्ठी	7.....	8.....	येषाम्
सप्तमी	9.....	10.....	येषु

यम्, येभ्यः, ययोः, यस्मात्, ययोः, याभ्याम्, यस्मिन्, यौ, यस्य, याभ्याम्

4. यत् = जो (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	1.....
द्वितीया	2.....	ये	3.....
तृतीया	4.....	याभ्याम्	5.....
चतुर्थी	6.....	याभ्याम्	7.....
पंचमी	8.....	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	9.....
सप्तमी	10.....	ययोः	यासु

यस्याम्, यासाम्, याः, याभ्यः, यस्याः, याम्, याः, यया, याभिः, यस्यै

© New Saraswati House (India) Private Limited

5. किम् = क्या (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	1.....	के
द्वितीया	2.....	कौ	3.....
तृतीया	केन	4.....	5.....
चतुर्थी	कस्मै	6.....	7.....
पंचमी	8.....	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	9.....	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	10.....

केषु, केभ्यः, कैः, कम्, कौ, काभ्याम्, कस्मात्, कयोः, काभ्याम्, कान्

6. किम् = क्या (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	1.....	के	काः
द्वितीया	काम्	2.....	काः
तृतीया	3.....	काभ्याम्	4.....
चतुर्थी	कस्यै	5.....	काभ्यः
पंचमी	6.....	काभ्याम्	7.....
षष्ठी	कस्याः	8.....	9.....
सप्तमी	10.....	कयोः	कासु

कस्याम्, केभ्यः, काभ्याम्, काभिः, कया, कस्याः, के, कयोः, कासाम्, का

© New Saraswati House (India) Private Limited

3 धातुरूप-प्रकरणम्

धातु–जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो उसे **क्रिया** कहते हैं; जैसे–खाना, पीना, हँसना, चलना, पढ़ना इत्यादि। इन क्रियाओं के मूल रूप को **धातु** कहते हैं। जिस प्रकार धातु को किसी भी आकार में ढाला जा सकता है, उसी प्रकार धातु से कोई भी शब्द बनाया जा सकता है।

संस्कृत में क्रिया को व्यक्त करने वाली इन सभी धातुओं के रूप तीनों लिंगों में एक समान चलते हैं। निम्नलिखित धातुओं के अर्थों को समझ लीजिए:

√पठ्	=	पढ़ना	√वद्	=	बोलना
√खाद्	=	खाना	√यज्	=	यज्ञ करना
√पत्	=	गिरना	√भ्रम्	=	घूमना
√दृश् (पश्य्)	=	देखना	√पच्	=	पकाना
√चल्	=	चलना	√तॄ (तर्)	=	तैरना
√गम् (गच्छ्)	=	जाना	√चर्	=	चरना, चलना
√लिख्	=	लिखना	√गर्ज्	=	गरजना
√हस्	=	हँसना	√खेल्	=	खेलना
√नृत् (नृत्य्)	=	नृत्य करना (नाचना)	√क्रीड्	=	खेलना
√धाव्	=	दौड़ना	√खन्	=	खोदना
√नम्	=	झुकना, नमस्कार करना	√क्षिप्	=	फेंकना
√रुद् (रोद्)	=	रोना	√भू (भव्)	=	होना
√दा (यच्छ्)	=	देना	√कृष् (कर्ष्)	=	खींचना
√स्था (तिष्ठ्)	=	ठहरना, बैठना	√कूज्	=	चहचहाना
√पा (पिब्)	=	पीना	√रक्ष्	=	रक्षा करना, रखना
			√अस्	=	होना

धातु में कुछ प्रत्यय जोड़कर क्रिया रूप बनाए जाते हैं। ये प्रत्यय लकार, वचन तथा पुरुष के अनुसार अलग-अलग होते हैं।

लकाराः

काल तथा अवस्था के अनुसार दस लकार होते हैं–लट् लकार, लृट् लकार, लोट् लकार, लङ् लकार, विधिलिङ् लकार, लिट् लकार, लुट् लकार, लेट् लकार, लुङ् लकार तथा लृङ् लकार। परंतु मुख्यतः पाँच लकारों–लट्, लृट्, लङ्, लोट् एवं विधिलिङ् का ही प्रयोग होता है। आरंभ में केवल लट् और लृट् लकारों का परिचय ही पर्याप्त है।

© New Saraswati House (India) Private Limited

1. लट् लकारः

इसका प्रयोग *वर्तमान काल* के लिए किया जाता है; यथा–ता है, ती है, ते हैं, तीं हैं, ते हो, ती हो, ता हूँ, ती हूँ इत्यादि। इसमें निम्नलिखित प्रत्यय जुड़ जाते हैं :

लट् लकारः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	तः	अन्ति
मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
उत्तम पुरुष	आमि	आवः	आमः

लट् लकार के कुछ धातु रूप इस प्रकार हैं :

√पठ् = पढ़ना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

√खाद् = खाना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादति	खादतः	खादन्ति
मध्यम पुरुष	खादसि	खादथः	खादथ
उत्तम पुरुष	खादामि	खादावः	खादामः

√पत् = गिरना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतति	पततः	पतन्ति
मध्यम पुरुष	पतसि	पतथः	पतथ
उत्तम पुरुष	पतामि	पतावः	पतामः

√दृश् (पश्य्) = देखना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

© New Saraswati House (India) Private Limited

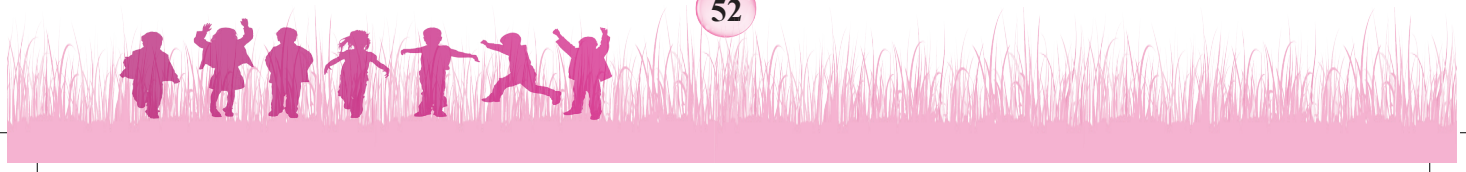

√चल् = चलना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलति	चलतः	चलन्ति
मध्यम पुरुष	चलसि	चलथः	चलथ
उत्तम पुरुष	चलामि	चलावः	चलामः

√गम् (गच्छ्) = जाना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

√लिख् = लिखना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
मध्यम पुरुष	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उत्तम पुरुष	लिखामि	लिखावः	लिखामः

√हस् = हँसना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसति	हसतः	हसन्ति
मध्यम पुरुष	हससि	हसथः	हसथ
उत्तम पुरुष	हसामि	हसावः	हसामः

√नृत् (नृत्य्) = नाचना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
मध्यम पुरुष	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उत्तम पुरुष	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

√धाव् = दौड़ना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	धावति	धावतः	धावन्ति
मध्यम पुरुष	धावसि	धावथः	धावथ
उत्तम पुरुष	धावामि	धावावः	धावामः

© New Saraswati House (India) Private Limited

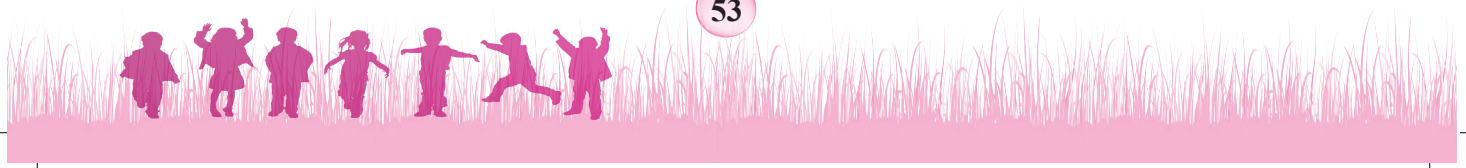

√नम् = नमस्कार करना/झुकना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नमति	नमतः	नमन्ति
मध्यम पुरुष	नमसि	नमथः	नमथ
उत्तम पुरुष	नमामि	नमावः	नमामः

√रुद् (रोद्) = रोना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति
मध्यम पुरुष	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
उत्तम पुरुष	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः

√दा (यच्छ्) = देना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यच्छति	यच्छतः	यच्छन्ति
मध्यम पुरुष	यच्छसि	यच्छथः	यच्छथ
उत्तम पुरुष	यच्छामि	यच्छावः	यच्छामः

√स्था (तिष्ठ्) = बैठना, ठहरना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

√पा (पिब्) = पीना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

√वद् = बोलना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वदति	वदतः	वदन्ति
मध्यम पुरुष	वदसि	वदथः	वदथ
उत्तम पुरुष	वदामि	वदावः	वदामः

© New Saraswati House (India) Private Limited

√यज् = यज्ञ करना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यजति	यजतः	यजन्ति
मध्यम पुरुष	यजसि	यजथः	यजथ
उत्तम पुरुष	यजामि	यजावः	यजामः

√भ्रम् = घूमना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भ्रमति	भ्रमतः	भ्रमन्ति
मध्यम पुरुष	भ्रमसि	भ्रमथः	भ्रमथ
उत्तम पुरुष	भ्रमामि	भ्रमावः	भ्रमामः

√पच् = पकाना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचति	पचतः	पचन्ति
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथः	पचथ
उत्तम पुरुष	पचामि	पचावः	पचामः

√तृ (तर्) = तैरना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तरति	तरतः	तरन्ति
मध्यम पुरुष	तरसि	तरथः	तरथ
उत्तम पुरुष	तरामि	तरावः	तरामः

√चर् = चरना, चलना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चरति	चरतः	चरन्ति
मध्यम पुरुष	चरसि	चरथः	चरथ
उत्तम पुरुष	चरामि	चरावः	चरामः

√गर्ज् = गरजना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गर्जति	गर्जतः	गर्जन्ति
मध्यम पुरुष	गर्जसि	गर्जथः	गर्जथ
उत्तम पुरुष	गर्जामि	गर्जावः	गर्जामः

© New Saraswati House (India) Private Limited

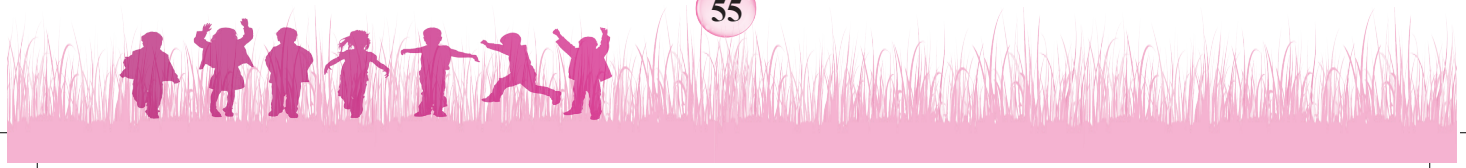

√खेल् = खेलना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खेलति	खेलतः	खेलन्ति
मध्यम पुरुष	खेलसि	खेलथः	खेलथ
उत्तम पुरुष	खेलामि	खेलावः	खेलामः

√क्रीड् = खेलना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीडति	क्रीडतः	क्रीडन्ति
मध्यम पुरुष	क्रीडसि	क्रीडथः	क्रीडथ
उत्तम पुरुष	क्रीडामि	क्रीडावः	क्रीडामः

√खन् = खोदना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खनति	खनतः	खनन्ति
मध्यम पुरुष	खनसि	खनथः	खनथ
उत्तम पुरुष	खनामि	खनावः	खनामः

√क्षिप् = फेंकना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्षिपति	क्षिपतः	क्षिपन्ति
मध्यम पुरुष	क्षिपसि	क्षिपथः	क्षिपथ
उत्तम पुरुष	क्षिपामि	क्षिपावः	क्षिपामः

√भू (भव्) = होना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

√कृष् (कर्ष्) = खींचना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कर्षति	कर्षतः	कर्षन्ति
मध्यम पुरुष	कर्षसि	कर्षथः	कर्षथ
उत्तम पुरुष	कर्षामि	कर्षावः	कर्षामः

© New Saraswati House (India) Private Limited

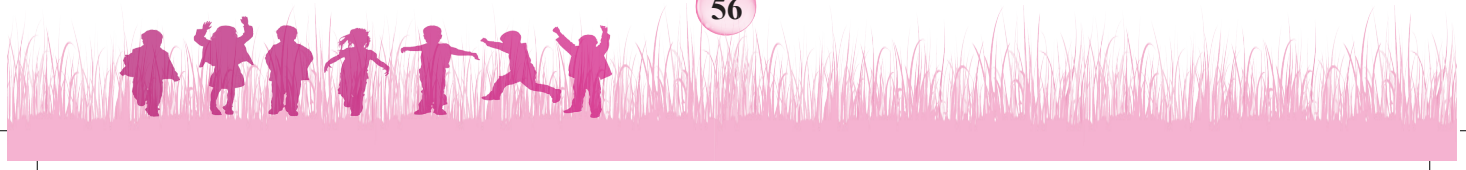

√कूज् = चहचहाना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कूजति	कूजतः	कूजन्ति
मध्यम पुरुष	कूजसि	कूजथः	कूजथ
उत्तम पुरुष	कूजामि	कूजावः	कूजामः

√रक्ष् = रक्षा करना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति
मध्यम पुरुष	रक्षसि	रक्षथः	रक्षथ
उत्तम पुरुष	रक्षामि	रक्षावः	रक्षामः

2. लृट् लकारः

इसका प्रयोग भविष्यत् काल के लिए किया जाता है; यथा–गा, गे, गी। लृट् लकार के कुछ रूप इस प्रकार हैं :

√पठ् = पढ़ना (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

√खाद् = खाना (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादिष्यति	खादिष्यतः	खादिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	खादिष्यसि	खादिष्यथः	खादिष्यथ
उत्तम पुरुष	खादिष्यामि	खादिष्यावः	खादिष्यामः

√पत् = गिरना (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतिष्यति	पतिष्यतः	पतिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पतिष्यसि	पतिष्यथः	पतिष्यथ
उत्तम पुरुष	पतिष्यामि	पतिष्यावः	पतिष्यामः

© New Saraswati House (India) Private Limited

√दृश् (पश्य्) = देखना (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

√चल् = चलना (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलिष्यति	चलिष्यतः	चलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चलिष्यसि	चलिष्यथः	चलिष्यथ
उत्तम पुरुष	चलिष्यामि	चलिष्यावः	चलिष्यामः

इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओं के **लृट् लकार** के प्रथम पुरुष के रूप देखकर आप आगे रूप स्वयं चला सकते हैं :

धातु		अर्थ		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
√गम्	=	जाना	=	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
√लिख्	=	लिखना	=	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
√हस्	=	हँसना	=	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
√नृत्	=	नाचना	=	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
√धाव्	=	दौड़ना	=	धाविष्यति	धाविष्यतः	धविष्यथ
√नम्	=	झुकना/नमस्कार करना	=	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
√रुद्	=	रोना	=	रोदिष्यति	रोदिष्यतः	रोदिष्यन्ति
√दा (यच्छ्)	=	देना	=	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
√स्था (तिष्ठ्)	=	बैठना	=	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
√पा (पिब्)	=	पीना	=	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
√वद्	=	बोलना	=	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
√यज्	=	यज्ञ करना	=	यक्ष्यति	यक्ष्यतः	यक्ष्यन्ति
√भ्रम्	=	घूमना	=	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति
√पच्	=	पकाना	=	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
√तॄ	=	तैरना	=	तरिष्यति	तरिष्यतः	तरिष्यन्ति
√चर्	=	चरना	=	चरिष्यति	चरिष्यतः	चरिष्यन्ति
√गर्ज्	=	गरजना	=	गर्जिष्यति	गर्जिष्यतः	गर्जिष्यन्ति
√खेल्	=	खेलना	=	खेलिष्यति	खेलिष्यतः	खेलिष्यन्ति
√क्रीड्	=	खेलना	=	क्रीडिष्यति	क्रीडिष्यतः	क्रीडिष्यन्ति

© New Saraswati House (India) Private Limited

√खन्	=	खोदना	=	खनिष्यति	खनिष्यतः	खनिष्यन्ति
√क्षिप्	=	फेंकना	=	क्षेप्स्यति	क्षेप्स्यतः	क्षेप्स्यन्ति
√भू	=	होना	=	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
√कृष्	=	खींचना	=	कर्क्ष्यति	कर्क्ष्यतः	कर्क्ष्यन्ति
√कूज्	=	चहचहाना	=	कूजिष्यति	कूजिष्यतः	कूजिष्यन्ति
√रक्ष्	=	रक्षा करना	=	रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति
√अस्	=	होना	=	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति

ध्यातव्यम्

- एक धातु के अनेक अर्थ हो सकते हैं; यथा–√नम् इत्यादि।
- कुछ धातुओं में प्रत्यय के साथ जुड़ने पर 'इ' का आगम हो जाता है; जैसे–चलिष्यति
- लृट् लकार में मूल धातु का रूप प्रायः लट् लकार से अलग हो जाता है।
- एक ही अर्थ के लिए भी अनेक धातु हो सकते हैं; यथा–खेलना के लिए √क्रीड्, √खेल् इत्यादि।
- द्विवचन के तीनों पद लट् व लृट् लकार में विसर्गयुक्त होते हैं।
- एकवचन के तीनों पुरुषों के रूपों में ह्रस्व स्वर 'इ' की मात्रा लगती है।
- ध्यान रखें कि शुद्ध लिखने के लिए शुद्ध उच्चारण अत्यावश्यक है।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. क्रिया का मूल रूप ही धातु कहलाता है।
2. संस्कृत में तीन वचन होते हैं–एकवचन, द्विवचन और बहुवचन।
3. मूल धातु में प्रत्यय जुड़ने पर क्रिया रूप बनते हैं।
4. लकार दस होते हैं, पर प्रमुख पाँच लकारों का ही प्रयोग होता है।
5. लट् लकार का प्रयोग वर्तमान काल के लिए किया जाता है।
6. लृट् लकार का प्रयोग भविष्यत् काल के लिए किया जाता है।
7. कुछ धातुओं के लट् लकार मूल धातु के अनुसार चलते हैं, लेकिन कुछ धातुओं के लट् लकार में परिवर्तन हो जाता है।
   उदाहरणार्थ–√गम् = गच्छति, √दृश् = पश्यति इन्हें अलग से स्मरण कर लेना चाहिए।

© New Saraswati House (India) Private Limited

प्रायोगिकाभ्यासः

I. कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(कोष्ठक से उचित पदं चुनकर रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए।)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
1.	रोदिति	रुदितः	.....	(रोदन्ति/रुदन्ति)
	रोदिषि	.....	रुदिथ	(रोदिथः/रुदिथः)
	.....	रुदिवः	रुदिमः	(रोदिमि/रुदिमि)
2.	धावति	.....	धावन्ति	(धावतः/धावसः)
	.....	धावथः	धावथ	(धावासि/धावसि)
	धावामि	धावावः	.....	(धावमः/धावामः)
3.	पठति	पठतः	.....	(पठन्ती/पठन्ति)
	पठसि	.....	पठथ	(पठथ/पठथः)
	.....	पठावः	पठामः	(पठामी/पठामि)
4.	.....	गच्छतः	गच्छन्ति	(गच्छति/गच्छाति)
	गच्छसि	गच्छथः	.....	(गच्छथ/गमथः)
	गच्छामि	.....	गच्छामः	(गच्छवः/गच्छावः)
5.	.....	यच्छतः	यच्छन्ति	(यच्छती/यच्छति)
	यच्छसि	.....	यच्छथ	(यच्छथः/यच्छथ)
	यच्छामि	.....	यच्छामः	(यच्छावः/यछावः)
6.	भ्रमति	भ्रमतः	.....	(भ्रमन्ति/भ्रमन्ती)
	भ्रमसि	.....	भ्रमथ	(भ्रमथः/भम्रथः)
	.....	भ्रमावः	भ्रमामः	(भ्रमामि/भ्रमामी)
7.	.....	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति	(तिष्ठती/तिष्ठति)

© New Saraswati House (India) Private Limited

	तिष्ठसि	.....	तिष्ठथ	(तिष्ठथः/तिष्ठाथः)
	तिष्ठामि	तिष्ठावः	.....	(तिष्ठमः/तिष्ठामः)
8.	.....	पिबतः	पिबन्ति	(पिबति/पिबाति)
	पिबसि	.....	पिबथ	(पिबाथः/पिबथः)
	पिबामि	.....	पिबामः	(पिबावः/पिबामः)
9.	पचति	.....	पचन्ति	(पकतः/पचतः)
	.....	पचथः	पचथ	(पचासि/पचसि)
	पचामि	पचावः	.....	(पचमि/पचामः)
10.	.....	यजतः	यजन्ति	(यजति/यजाति)
	यजसि	यजथः	.....	(यजथ/यजथः)
	यजामि	.....	यजामः	(यजवः/यजावः)
11.	तरति	.....	तरन्ति	(तरतः/तरथः)
	तरसि	.....	तरथ	(तरथः/तरसः)
	तरामि	.....	तरामः	(तरावि/तरावः)
12.	.....	रक्षतः	रक्षन्ति	(रक्षति/रक्षाति)
	.....	रक्षथः	रक्षथ	(रक्षसि/रक्षामि)
	.....	रक्षावः	रक्षामः	(रक्षमि/रक्षामि)
13.	क्रीडति	क्रीडतः	.....	(क्रीडन्ती/क्रीडन्ति)
	क्रीडसि	क्रीडथः	.....	(क्रीडाथः/क्रीडथ)
	.....	क्रीडावः	क्रीडामः	(क्रीडमि/क्रीडामि)
14.	खादति	खादतः	.....	(खादन्ती/खादन्ति)
	.....	खादथः	खादथ	(खादासि/खादसि)
	.....	खादावः	खादामः	(खादामि/खादमि)
15.	गर्जति	.....	गर्जन्ति	(गजतिः/गर्जतः)
	.....	गर्जथः	गर्जथ	(गजसि/गर्जसि)
	गर्जामि	गर्जावः	.....	(गर्जमः/गर्जामः)

© New Saraswati House (India) Private Limited

II. अधोलिखितानि पदानि शुद्धं कुरुत।

(नीचे लिखे शब्दों को शुद्ध कीजिए।)

1. गच्छिष्यति ..... 2. लिखिष्यामि .....
3. नमिष्यसि ..... 4. नृतिष्यति .....
5. तिष्ठिष्यामि ..... 6. दासिष्यति .....
7. पिबिष्यतः ..... 8. वदस्यति .....
9. तृष्यति ..... 10. गर्जस्यति .....
11. हसष्यति ..... 12. कृष्यथः .....
13. भूविष्यति ..... 14. कूजस्यावः .....
15. पश्यिष्यामः ..... 16. पिविष्यति .....

III. मञ्जूषातः उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित पद छाँटकर रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए।)

(क)	1.	नंस्यति	.....	नंस्यन्ति
	2.	.....	नंस्यथः	नंस्यथ
	3.	नंस्यामि	नंस्यावः	.....
(ख)	1.	भविष्यति	भविष्यतः	.....
	2.	भविष्यसि	.....	भविष्यथ
	3.	भविष्यामि	.....	भविष्यामः
(ग)	1.	हसिष्यति	हसिष्यतः	.....
	2.	.....	हसिष्यथः	.....
	3.	हसिष्यामि	.....	हसिष्यामः

हसिष्यावः, हसिष्यथ, हसिष्यन्ति, हसिष्यसि, भविष्यथः,
भविष्यावः,भविष्यन्ति, नंस्यसि, नंस्यतः, नंस्यामः

© New Saraswati House (India) Private Limited